कमलेश्वर की कहानी : एक अध्ययन

डॉ.सत्यवीर सिंह सह–आचार्य, हिन्दी
लाल बहादुर शास्त्री, राजकीय महाविद्यालय, कोटपूतली

सारांश

नई कहानी तथा समान्तर कहानी के जनक कमलेश्वर की कहानी भारतीय नगरीय मध्यम वर्ग के जीवन पर लिखी गई है। कमलेश्वर कहानियों को चार भागों मे विभक्त करके देखा जा सकता है। इलाहाबाद, मैनपुरी, दिल्ली और मुम्बई के जन –जीवन पर आधारित कहानियॉ प्रमुख रूप से लिखी गई है।

संकेत अक्षर

नई कहानी, समान्तर कहानी, नगरीय चेतना, यथार्थ, भोगा हुआ यथार्थ,

कहानी : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप :

कहानी गद्य कथा साहित्य का सर्वाधिक चर्चित कथा रूप है जिसे, संस्कृत वाड्.मय में 'गल्प' तथा 'आख्यायिका' के अभिधान से अभिहीत किया गया है। वर्तमान कहानी अंग्रेजी के साहित्य की 'शॉर्ट स्टोरी' बंगला साहित्य के माध्यम से हिंदी में 'कहानी' संज्ञा से आयी। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की सर्वाधिक चर्चित एवं पठित काव्य विधा यदि कोई है तो वह है – कहानी। पाश्चात्य विचारक एवं पाश्चात्य देशों में कहानी विद्या के जन्मदाताओं में एक एडगर एलन पो कहानी को परिभाषित करते हुए लिखते हैं – छोटी कहानी एक ऐसा आख्यान है जो, इतना छोटा है कि एक बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से लिखा गया हो। वह स्वतः पूर्ण होती है।[1] हड़सन के अनुसार – ''वह घुड़दौड़ के समान होती है । जिस प्रकार घुड़दौड़ का आदि और अंत महत्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार कहानी का आदि और अंत ही विशेष महत्व का होता है।[3] विश्वकोष ब्रिटेनिका में कहानी को परिभाषित करते हुए लिखा है – ''कहानी में एक ही चरित्र एक ही घटना, एक ही भावना अथवा भावनाओं की श्रृंखला एक ही स्थिति के कारण अग्रसर होती है, वह संक्षिप्त, अत्यंत संगठित तथा पूर्ण कथारूप है।[4] फोस्टर के अनुसार – ''कहानी परस्पर सम्बद्ध घटनाओं का वह क्रम है, जो किसी परिणाम पर पहुंचता है।[5] भारतीय विचारकों ने भी कहानी को परिभाषित किया। मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार – ''कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथा विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं[6] नलिन विलोचन शर्मा के अनुसार – ''कहानी क्या है, तलवार की धार पर धावना है। कहानीकार बिंदु में केन्द्रित विराट और पूर्ण रचना का उद्घाटन करता है। कहानीकारों के दो ही काम होते हैं बिंदु फैले नहीं और बिंदु पर से विचले–हटे नहीं। पिंड में ब्रह्माण्ड का सत्य देख लेना कष्ट साध्य साधना है, यह संत ही नहीं, ईमानदार कहानी लेखक भी मानते हैं।[7] बाबू गुलाबराय के अनुसार – ''छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है, जिसमें

एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति – केन्द्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक उत्थान–पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहल पूर्ण वर्णन होता है।[8] कहानी को पाश्चात्य तथा पौर्वात्य विद्वानों द्वारा परिभाषित किया गया है। आज भी विचारक कथा तथा समीक्षक इस विद्या की समीक्षा तथा अवधारणात्मक स्वरूप पर विचार प्रकट कर रहे हैं। उन्नीसवीं शती के आरंभिक दशकों में उत्पन्न हिंदी गद्य साहित्य का यह रूप आज एक विशाल उद्यान का रूप धारण कर चुका है। यह उद्यान बहुरंगी पल्लव तथा पुष्पों से चतुर्दिश सुवासित कर रहा है। हिंदी कहानी विद्या एक प्रौढ़ तथा परिपक्व, चर्चित विद्या बनी हुई है। कहानी निरंतर गतिमान उस झरने, स्त्रोत के समान हैं, जिसका जल शुभ्र तथा स्वच्छ निर्मल होता है। उसी प्रकार कहानी बहते नीर की भांति है, जिसका जल निर्मल गतिमान है। आज कहानी को किसी परिभाषा विशेष में बांधना कहानी के साथ बेमानी होगी। उपन्यास की भांति कहानी के भी छह तत्व माने हैं। कथानक, पात्र अथवा चरित्र चित्रण, संवाद, वातावरण, शैली, उद्देश्य। ये तत्व सुविधा की दृष्टि से निर्मित हैं। कहानी इन सबसे मुक्त एक ऐसी रम्य विधा है, जिसने पाठकों को अपनी रम्यता, भव्यता, सौंदर्य सम्पन्नता से आकृष्ट किया है, चकित किया है। प्रभावशाली चित्रण प्रभावान्विति का विशेष ध्यान रखा जाता है। कहानी साहित्य की एक ऐसी विद्या है, जो साहित्य के प्रत्येक रूपों से कुछ आवश्यक प्रभावकारी बातों को स्वयं में समेटकर लिखी जाती है। इस विद्या में सर्वाधिक प्रयोग हुए हैं। इसी प्रयोगधर्मिता के बल पर इसने अन्य विधाओं के मध्य अपनी साख को स्थापित किया है। बीसवीं – इक्कीसवीं शती की सबसे चर्चित विधा कहानी मानी गयी है। कहानी के स्वरूप को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता हैं –

1. कहानी में एक ही विषय का प्रस्तुतीकरण होता है तथा संवेदनात्मक अन्विति होती है।
2. कहानी में मानवीय संवेदनाओं, अनुभूतियों एवं तथ्यों की रोचक व्यंजना होती है।
3. कहानी में कथावस्तु, चरित्र चित्रण तथा घटनाओं का आकार लघु होता है।
4. कहानी का एक निश्चित उद्देश्य होता है। मनोरंजन के साथ–साथ जीवन की शाश्वत समस्याओं को स्पष्ट करना भी कहानी का लक्ष्य है।
5. कहानी की शैली में नाटकीयता होती है।
6. सामान्य घटना कहानीकार का दृष्टिकोण पाकर सार्वभौमिक घटना हो जाती है।
7. कहानी में जीवन का विस्तार नहीं होता, संक्षिप्तता और गहराई होती है।

जीवन की अनेक घटनाओं को भी अतीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है किंतु केन्द्र बिन्दु एक मनोभाव या जीवन का अंग विशेष ही बना रहता है।[9] कहानी गद्य में रचित एक ऐसी विद्या है, जिसमें जीवन की संतुलित रूपरेखा, प्रभावोत्पादकता एकान्विति, सौंदर्य, कौतूहल, कार्यव्यापार की तीव्रता तथा

उत्सुकता रहती है, जिससे पाठकों को बरबस अपनी तरफ खींचने में सफल होती है। यही कहानी का अवधारणात्मक स्वरूप है।

हिंदी कहानी की विकास यात्रा :

हिंदी कहानी की सौ वर्ष से अधिक की विकास यात्रा को अनेक चरणों में विभक्त करके देखा जा सकता हैं –

1. आरंभिक हिंदी कहानी
2. प्रेमचन्द युगीन हिंदी कहानी
3. प्रेमचन्दोत्तर हिंदी कहानी
4. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कही
5. समकालीन हिंदी कहानी ।

सर्वप्रथम हिंदी कहानी के प्रश्न पर इंदुमती (1901) किशोरीलाल द्वारा लिखित थी। अधिकतर विद्वानों ने इसी कहानी को हिंदी की प्रथम कहानी माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 1900 ई. से लेकर 1907 तक लिखी गयी हिंदी की कुछ कहानियों को प्रथम कहानी माना हैं। इन कहानियों के नाम हैं – इंदुमती (किशोरीलाल गोस्वामी) गुलबहार (किशोरीलाल गोस्वामी) प्लैग की चुड़ैल (मास्टर भगवानदास) ग्यारह वर्ष का समय (रामचन्द्र शुक्ल) पंडित और पंडितानी (गिरिजादत्त वाजपेयी) दुलाईवाली (बंग महिला) कुछ विद्वानों के मत अलग–अलग हैं – ''आचार्य शुक्ल के बाद हिंदी की पहली मौलिक कहानी को ढूंढने के क्रम में काफी अनुसंधान हुआ। इंदुमती को शेक्सपीयर के टेम्पेस्ट की छाया कहकर विद्वानों ने उसे मौलिक कहानी के दायरे से बाहर कर दिया। देवीप्रसाद वर्मा ने सन् 1901 में छत्तीसगढ़ मित्र में छपी माधव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की पहली मौलिक कहानी सिद्ध किया। डॉ. बच्चन सिंह ने किशोरीलाल गोस्वामी की ही एक दूसरी कहानी प्रणयिनी परिणय को पहली कहानी माना है। उनके अनुसार यह कहानी सन् 1887 में लिखी गयी थी। ऐसी स्थिति में माना जा सकता है कि हिंदी कहानी की विकास–यात्रा 1887 ई. से शुरू हई।[10]

भारतीय साहित्य में कहानी का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद के यम–यमी पुरुखा उर्वशी, सरमा और पणिगण जैसे लाक्षणिक संवादों ब्राह्मणों के सौपर्णी – काद्रव जैसे रूपकात्मक व्याख्यानों उपनिषदों के सनत्कुमार – नारद जैसे ब्रह्मर्षियों की भावमूलक व्याख्याओं महाभारत के गंगावतरण, श्रृंग, नहुष ययाति, शकुंतला, नल आदि जैसे उपाख्यानों गीतों के प्रवचनों, हरिवंश परिशिष्ट, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, शिव, स्कंद जैसे पुराणों के वार्तालापों में खोजा सकता है। इनमें कहानी की प्रेरणा का आधार धार्मिक आधार, आध्यात्मिक तत्वचिंतन

तथा नीति और कर्त्तव्य की शिक्षा देना है। यही कहानी व्यंजनापूर्ण रूपको से वर्णन प्रधान चरित्रों तक रमी हुई हैं।[11] इस क्रम से आगे बढ़ते हैं, तो पाते हैं कि प्राचीनकाल में कहानी एक कथात्मक रूप में शामिल थी। इस कथात्मक शैली की कथाओं के विषय वीरों तथा राजाओं के शौर्य, प्रेम, न्याय, ज्ञान और वैराग्य, समुद्री यात्राओं के साहस, आकाश तथा अन्य अगम्य पर्वतीय प्रदेशों में प्राणियों के अस्तित्व आदि हैं। इनमें कथानक या घटना – पर्वतीय प्रदेशों में प्राणियों के अस्तित्व आदि हैं। इनमें कथानक या घटना – प्रधान रूप ही अधिक मिलते हैं। इस प्रकार की कथाएँ भी शतियों तक प्रचार पाती रही है। संभवतः वे प्राकृत में लिपिबद्ध की गयी होगी। इन कथाओं में सबसे प्राचीन कथा गुणाढय की वृहत्कथा हैं, जिसका निर्माण रामायण, उदयन, वासवदत्ता, समुद्री व्यापारियों तथा राजकुमारियों के पराक्रमी घटना प्रधान कथाओं से हुआ है। यद्यपि यह अप्राप्त हैं, किन्तु इसके संक्षिप्त रूपों में बुधस्वामी के वृहत्कथाश्लोकसंग्रह, क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामंजरी और सोमदेव की कथादिरत्नाकर से इसके स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। दण्डी के इसके लिए प्रयुक्त 'कथा' शब्द से ज्ञात होता है कि यह ग्रंथ अनुमानतः गद्य में रहा होगा। संभव है कि बीच–बीच में श्लोकादि भी रहे हों। 'बृहत्कथा' की अनेक मनोरंजनपूर्ण कथाओं का विषय और शैली का प्रभाव दण्डी के दंश कुमार चरित' 'बाणभटट् की कादंबरी' सुबंधु की वासदवत्ता, धनपाल की 'तिलकमंजरी' और सोमदेव की 'यशस्तिलक' पर भी लक्षित है। यहाँ तक की काव्य ग्रंथ 'मालती माधव', अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रत्नावली, मृच्छकटिक आदि भी इस कहानी परंपरा से प्रभावित हैं।[11] संस्कृत साहित्य और तत्पश्चात् पलि, प्राकृत, अपभ्रंश में कथा, आख्यायिका की एक लंबी परंपरा रही है। उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में कहानी विद्या ने एक नया वस्त्र धारण किया।

हिंदी कहानी की विकास यात्रा का प्रारंभिक पड़ाव आधुनिक काल के प्रारंभिक दशक से शुरू माना जा सकता है, जिसमें लल्लुलाल कृत प्रेमसागर सदल मिश्र कृत सुखसागर, इंशा अल्ला खां कृत, 'रानी केतकी की कहानी' को इस काल की गद्य रचनाओं में सम्मिलित करते हुए उनमें कथात्मकता के सूत्र खोज सकते हैं। इसके शैशवकाल या पूर्व प्रेमचंद काल में जिनका समय 1900 से लेकर 1910 तक माना जाता है। इस कथा युग में सरस्वती का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना थी। जिसने आधुनिकता के द्वार खोले और अनेक विधाओं एवं लेखकों को तैयार किया। इस समय इंदुमती (किशोरीलाल गोस्वामी) एक टोकरी भर मिट्टी (माधवराय सप्रे) राखीबंद भाई (वृंदावनलाल वर्मा) ग्राम (जयशंकर प्रसाद) दुलाईवाली (बंग महिला) प्रमुख कहानियों का सृजन एक अभूतपूर्व घटना थी। इससे आगे 1910 से 1927 तक के काल में उसने कहा था (चन्द्रधर शर्मा गुलेरी) पंचपरमेश्वर (प्रेमचंद) आदि कालजयी कहानियों का सृजन हुआ। अब हिंदी कहानियों की गति तेज हो रही थी। साथ ही परिपक्वता के साथ कहानियों का सृजन सामने आ रहा था। प्रेमचंद के जन्म एवं प्रसाद के जन्म के साथ ही हिंदी कहानी का जन्म माना जा सकता है। प्रेमचंद और

कहानी विधा एक सिक्के के दो पहलू हैं। यदि प्रेमचंद को हिंदी कहानी का पर्याय कहा जाए , तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह सत्य भी है और तथ्य भी । हिंदी कहानी को एक विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय मुंशी प्रेमचंद का था। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के शब्दों में – ''इन दो (प्रसाद एवं प्रेमचंद) महान् कथा शिल्पियों से पृथक संस्थाओं के निर्माण हुए, जिनके अंतर्गत अनेकानेक प्रतिष्ठित, विकासकालीन कहानीकारों ने अपनी बहुमूल्य कलाकृतियां दी।[12] प्रेमचंद तथा प्रसाद के अतिरिक्त हिंदी कहानीकारों ने इस विधा को समृद्ध किया वे हैं – सुदर्शन, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' वृंदावन लाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, राहुल सांस्कृत्यायन, यशपाल, जैनेंन्द्र, रांगेय राघव, चतुरसेन शास्त्री, जी.पी. श्रीवास्तव, निराला, पांडेय बैचेन शर्मा 'उग्र', राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, मार्कण्डेय, जगदीशचंद्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, महीपसिंह, राकेश वत्स, अमृतराय, गंगाप्रसाद विमल, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, अनामिका, मृदुला गर्ग, ओमप्रकाश वाल्मीकि, भगवानदास मोरवाल, संजीव, रवीन्द्र कालिया, अखिलेश, काशीनाथ सिंह, अमरकांत, श्रीलाल शुक्ल, ज्ञानरंजन निर्मल वर्मा आदि कालजयी रचनाकारों की इस नामावली से इत्तर भी कुछ अन्य रचनाकार हैं, जिन्होंने हिंदी कहानी विधाप के कोश में श्री वृद्धि ही नहीं कि बल्कि प्रयोग किये। आज हिंदी कहानी की समृद्धि के पीछे एक लंबी परंपरा का हाथ है। यह परंपरा हमारी वैदिक धरोहर से प्रारंभ होकर समकालीन कहानी लेखन तक आती है, जो निरंतर गतिमान, प्रवाहमान है। इस परंपरा में अनेक विचार तथा वर्ग प्रधानता देखी जा सकती है। मसलन– समाजवादी, जनवादी, साम्यवादी आदि के साथ चरित्र प्रधान, घटना प्रधान, वातावरण प्रधानता के साथ स्त्रीवादी, दलित समस्याओं पर आधारित आदि कहानियों का विकास हुआ। वर्तमान में हिंदी कहानी विधा परिपक्व तथा सुदृढ़ काव्य विद्या के रूप में मौजूद है।

हिंदी कहानी यात्रा का प्रमुख पड़ाव स्वातंत्र्योत्तर कहानी के विभिन्न आंदोलनों में दिखलायी पड़ता है। नयी कहानी, सहज कहानी, सक्रिय कहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, अकहानी, जनवादी कहानी आदि ऐसे प्रमुख कथा आंदोलनों से हिंदी कहानी ने अनेक गद्य अपने को परिवर्तित किया। परिणामस्वरूप समाज केन्द्रित कहानी व्यक्ति केन्द्रित हो गयी। यथार्थ केन्द्रित, भोगा यथार्थ केन्द्रित कहानी के रूप में दृष्टिगत हुई। गाँव, देहात, कस्बाई, नगरीय, महानगरीय, परिवेश पर कहानियों लिखी जाने लगी। आदर्शो मूल्यों पर आधारित कहानियाँ के साथ क्रूर यथार्थ को चित्रित करने लगी। समाज केन्द्रित कहानी व्यक्ति केन्द्रित होने लगी। उपेक्षित, वंचित तबके को कहानी में स्थान मिलना प्रारंभ हुआ। अब कहानी में जनतांत्रिक मूल्यों पर आधारित समाज के प्रत्येक वर्ग तथा व्यक्ति की मनोवृतियों को जगह दी जाने लगी। कहानी ने शास्त्रीय धरातल को तोड़कर अनेक प्रतिमान स्थापित किये। इससे कहानी के दामन का विस्तार होने लगा।

कमलेश्वर की कथा यात्रा –

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी के अर्ध्वयु कमलेश्वर मूलतया कहानीकार थे। अनेक विद्य लेखन करने के पाश्चात् वे अपने को कहानीकार कहलवाना अधिक पसंद करते थे। हिंदी कथा साहित्य में उनकी पहचान भी एक कहानीकार के रूप में ही अधिक होती है। 1946 से लेकर 2007 तक वे निरंतर सृजनरत रहे। इस सृजनयात्रा को चार भागों में बाँटकर देखा जा सकता है। बकौल कमलेश्वर मेरी कथा – यात्रा के तीन पड़ाव हैं –

1. मैनपुरी से इलाहाबाद
2. इलाहाबाद से दिल्ली और
3. दिल्ली से बंबई
4. मुंबई से दिल्ली

सन् 1950 तक सारी कहानियाँ मैनपुरी में ही लिखी गई। कुछेक इलाहाबाद में भी, क्योंकि तब तक मेरा प्रगाढ संबंध अपने कस्बे के साथ था। इलाहाबाद (सन् 1946– 1959) का दौर मेरे लेखन का अत्यंत महत्वपूर्ण समय है। 'नई कहानी' आंदोलन का भी यही समय है, जो श्रीपतराय की पत्रिका 'कहानी' के वार्षिक विशेषाकों से शुरू हुआ था। इस दौर मे मैंने 'कस्बे का आदमी' राजा निरबंसिया, देवा की माँ, धूल उड जाती है, गर्मियों के दिन आई कहानियाँ लिखी थी। इसके बाद दिल्ली का समय है – सन् 1959– 1966। नई कहानी आंदोलन की पत्रिका तब तक निकल चुकी थी। भैरवप्रसाद गुप्त उसके संपादक थे। यह कहानी के वैचारिक और कलात्मक उत्कर्ष का समय था 'नई कहानी' की प्रतिष्ठा से प्रभावित तरह – तरह के यशकामी आंदोलनों का भी यह समय थ। भैरव जी के बाद 'नई कहानियाँ' पत्रिका का संपादन का दायित्व मुझे संभालना पड़ा था। यही से ज्ञानरंजन – रवीन्द्र कालिया की नई पीढ़ी का उदय हुआ था और हिंदी कहानी की दोनों पीढ़ियों के रचनाकार नए कथा शिल्प और कथ्य का उद्घाटन कर रहे थे। इसी दौर में मैंने जॉर्ज पंचम की नाक, नीली झील, मांस का दरिया, खोई हुई दिशाएँ, बयान, तलाश, दिल्ली में मौत आदि कहानियाँ लिखी थी।

तीसरा दौर बंबई महानगर का है जहाँ उस दिन वह मुझे बीच कैंडी पर मिली थी, जोखिम, लाश, रातें, अपना एकांत, इतने अच्छे दिन, मैं, चार महानगरों का तापमान जैसी कहानियाँ लिखी गई।

दिल्ली लौटकर आने की मेरी रचना का चौथा दौर कहा जा सकता है। इस दौरान मुझे इंतजार, वीपिंगविलो, कोहरा, हवा है हवा की आवाज नहीं हैं, सफेद सड़क, अपने देश में, इतिहास कथा तूम कौन हो, रावल की रेल, आजादी मुबारक जैसी कहानियाँ लिखने का मौका मिला । यह क्रम अभी भी जारी है।[13]

यह क्रम कमलेश्वर की मृत्यु 2007 तक जारी रहा । कमलेश्वर अपने अंतिम वर्षो में दिल्ली रहे। परिकथा का कुछ समय संपादन किया। यहीं पर रहकर सृजनरत रहे। कमलेश्वर की प्रथम कहानी 'फरार' (कमलेश्वर ने डॉ. सत्यवीर सिंह को एक साक्षात्कार में बताया) से लेकर 2007 तक लिखी सैकड़ों कहानियों तथा इन समस्त कहानियों को संग्रहित करके दर्जनभर संग्रहों में विभक्त कर हिंदी कथा साहित्य का अक्षुण्य भंडार की समृद्धि की। कमलेश्वर की प्रमुख कहानी संग्रह हैं –

1. राजा निरबंसिया – 1957
2. कस्बे का आदमी – 1957
3. खोयी हुई दिशाएँ – 1963
4. मांस का दरियाँ – 1969
5. जिंदा मुर्दे – 1969
6. बयान – 1972
7. मेरी प्रिय कहानियाँ –1972
8. इतने अच्छे दिन – 1989
9. कथा प्रस्थान – 1990
10. रावल की रेल – 1992
11. कोहरा – 1994
12. परिक्रमा – 1996
13. महफिल – 2000
14. समग्र कहानियाँ – 2001

कमलेश्वर का परिवेश, स्थान बदलता रहा साथ ही इस बदलाव की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में भी दिखलायी पड़ती है। उनकी कहानियों में मैनपुरी, दिल्ली तथा मुम्बई तथा इलाहाबाद का वातावरण परिलक्षित होता है। मधुकर सिंह के अनुसार – परिवेश के बीच जीती हुई, शक्ति और सीमाएँ झेलती हुई सहजता और कुछ असहजता के द्वंद्व से गुजरती हुई, संवेदना की केन्द्रीयता में शिल्प की सहज और कभी कभी बनावटी नवीनता धारण करती हुई, मनुष्य के गहरे द्वंद्व में धंसती और कभी–कभी सपाट प्रसंगों पर पसर जाती हुई कमलेश्वर की कहानियाँ अधिक वैविध्यपूर्ण, पठनीय और विशिष्ट हैं।[14]

समस्त कहानी संग्रह तथा कथा यात्रा के पड़ावों से गुजरती कमलेश्वर की कुछ कालजयी कहानियाँ जिनका रेखांकन लाजमी हैं। इन कालजयी कहानियों ने समाज के सामने कुछ ऐसी समस्याओं, घटनाओं मुद्दों को रखा, जिनके चलते समाज का अभी तक इस तरफ ध्यान नहीं गया था। प्रमुख कहानियों हैं –

सुबह का सपना, सीखंचे, गाय की चोरी, आत्मा का आवाज, गर्मियों के दिन, राजा निरबंसिया बेकार आदमी, देवा की माँ, नौकरीपेशा, मुर्दो की दुनिया, एक अश्लील कहानी, कस्बे का आदमी,, धूल उड़ जाती है, तलाश, स्मारक, बदनाम बस्ती, जार्ज पंचम की नाक, दिल्ली में एक मौत, लहर लौट गई, दिल्ली में एक ओर मौत, बयान, पराया शहर, जिंदा मुर्दःआसक्ति, रातें, इंतजार, चप्पले, कोहरा, आजादी मुबारक, जोखिम, लाश, नागमणि, कितने पाकिस्तान, अपना एकांत मैं, मानसरोवर के हंस, इतने अच्छे दिन, शोक समारोह, चार महानगरो का तापमान, दाल चीनी के जंगल, स्टोरी आदि।

कमलेश्वर की कहानी कला तथा कथा यात्रा के अंतर्गत कहानियों के रेखांकन पर कुछ समीक्षकों के विचार दृष्टव्य हैं। सूर्यनारायण रणसुभे के अनुसार – ''कमलेश्वर की कहानियाँ जीवन के प्रतिबद्ध हैं, मानवता के प्रतिबद्ध हैं। जिंदगी इन कहानियों के केन्द्र में हैं। जिंदगी के सभी पक्ष और सभी स्तर यहाँ व्यक्त हुए हैं।[15] मधुकरसिंह के अनुसार – ''कमलेश्वर की कहानियाँ साफ, स्वस्थ्य दृष्टि और संभावनापूर्ण भविष्य की पारदर्शी कहानियाँ हैं।[16] बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी कमलेश्वर की कहानियाँ भी बहुआयामी हैं। उनकी कहानियों में वैविध्यतर सर्वप्रमुख विशेषता है। साथ ही सामाजिक समस्याओं, युगीन समस्याओं एवं युगबोध उनकी कहानियों में हिलौरे लेता है। कथा यात्रा के प्रथम दौर की कहानी राजा निरबंसिया में आधुनिक युग के टूटते जीवन मूल्यों, आस्थाओं, विश्वासों तथा मजबूरियों को स्पष्ट करने के लिए दो भिन्न युगों की कथा को समानांतर चलाया है। बेबसी और लाचारी का दहकता अर्थतंत्र का इस्पाती दस्तावेज है राजा निरबंसिया। कस्बे की रीति–नीति परंपराओं एवं मूल्य संवेदन शून्य वातावरण पर आधारित अपनत्व की खोज में तड़पता कस्बायी व्यक्ति की मनःस्थिति का सत्य रेखांकन है। यथार्थ से परे एक ऐसी कहानी जिसमें सूक्ष्म सौंदर्य, वास्तविकता और कल्पना, व्यवहार और रूमानियत के सहारे नये शिल्प सौंदर्य के सम्पन्न 'नीली झील' कहानी कमलेश्वर की प्रतिभा का एक अलग कोण हैं।

इसी प्रकार दूसरे दौर की प्रमुख कहानी 'दिल्ली में एक मौत' महत्वपूर्ण कहानी है। नगरीय जीवन की संवेदन शून्यता तथा कृत्रिमता का कच्चा चिट्ठा है, यह कहानी। इसी प्रकार 'खोई हुई दिशाएं' महानगरीय जीवन संदर्भो को समेटकर पुराने मूल्यों को रौंदने तथा नवीन कृत्रिम मूल्यों को अभिव्यक्ति देती है। वैधव्य जीवन पर आधारित 'तलाश' कहानी एक विधवा और उसकी जवान बेटी पर केन्द्रित है। 'मांस का दरिया' वेश्या जीवन की अभिसप्तता को उजागर करती है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर लिखने की जोखिम हर साहित्यकार नहीं लेता । विषय को देखते हुए कमलेश्वर ने ऐसी भाषा का प्रयोग किया कि वेश्याओं के प्रति घृणा की बजाय सहानुभूति प्रकट होने लगती है– पाठकों में। बहुत ही सधी हुई भाषा में कहानी का सृजन एक विशिष्ट घटना है। कथा यात्रा के तीसरे दौर में प्रमुख कहानियां नागमणि, बयान, आसक्ति आदि में मूल्य संक्रमण, टूटते आदर्श सपने का विस्थापन तथा सच्चाई की हत्या इन कहानियों की

विषयवस्तु है। इससे कहानीकार कमलेश्वर की दृष्टि एवं सृष्टि अन्य से भिन्न नजर आती है। इसी प्रकार चौथे दौर की कहानियों में नगरीय, महानगरीय जीवन के छल–छदम्, रीति–नीति, परंपराओं एवं नवीन मूल्यों की बानगी है। कमलेश्वर एक समाज चेता कहानीकार हैं। उनकी दृष्टि से कोई भी घटना, परिवेश तथा बदलाव की आहट बच नहीं सकती। यह उनकी सूक्ष्म दृष्टि है कि प्रत्येक घटनाओं की आहट कमलेश्वर की कहानियों में पूर्ववर्ती रूप में स्थान पा जाती है। कमलेश्वर सच्चे अर्थो में जागरूक तथा दृष्टि सम्पन्न कथाकार हैं।

संदर्भ संकेत

1. डॉ. अमरनाथ – हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ. 116
2. वही,पृ. 117
3. वही, पृ. 117
4. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका, खंड – 20 पृ. 580
5. डॉ. सिंह विजयपाल सिंह – श्रेष्ठ कहानियाँ, भूमिका से उद्धृत
6. डॉ. अमरनाथ – हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ. 117
7. आचार्य तिवारी, रमाशंकर – हिंदी कहानियाँ, पृ. 5
8. डॉ. अग्रवाल, सुरेश – भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धांत, पृ. 348
9. डॉ. वणकर, धीरजभाई – कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ, पृ. 58
10. डॉ. अमरनाथ – हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, पृ. 117
11. वही,पृ. 183
12. डॉ. लाल, लक्ष्मीनारायण – हिंदी कहानी की शिल्प का विकास, पृ. 6
13. कमलेश्वर – समग्र कहानियाँ, भूमिका से उद्धृत
14. सं. सिंह, मधुकर – कमलेश्वर – पृ. 131
15. डॉ रणसुभे, सूर्यनारायण – कहानीकार कमलेश्वर : संदर्भ और प्रकृति, पृ. 122
16. सं. सिंह, मधुकर – कमलेश्वर, पृ. 147